e-ISJN: A4372-3069 (UGC Approved) ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-III
June 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

भारतेन्दु के काव्य में व्यंग्य का स्वरूपः एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 शरद कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी, वाराणसी।

सारांश

साहित्य मनुष्य की सर्वोत्तम कृति है। वह मानव–जीवन और मानव मन पर आधारित है। आधुनिक युग से पूर्व मानव को आनंद देने के लिए उसकी सानुभूति को जाग्रत करने के लिए मुख्यतः साहित्य की सृष्टि की जाती थी किन्तु जटिलताओं व संघर्षपूर्ण स्थिति व वर्तमान युग में साहित्यिक आदर्शों व दृष्टिकोण में परिवर्तन की आशा अपेक्षित हुई। परिणामतः उसके स्वरूप में समसामयिक जीवन के अन्तर्मन में व्याप्त विद्रूपता, संत्रास, कुण्ठा और अवसाद के प्रतिशोध में की गयी साहित्यिक प्रतिक्रियाओं को भी सम्मिलित किया गया, यही व्यंग्य का मूलाधार है। प्रचलित विधाओं में व्यंग्य का स्थान सर्वोपरि है। वस्तुतः जिस अर्थ एवं व्यापक सन्दर्भ में आज व्यंगय का प्रयोग हो रहा है वह इससे पूर्व कभी नहीं किया गया। काव्य महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, निबन्ध आदि सभी में व्यंग्य की व्यापकता है। वर्तमान युग की विषम परिस्थितियाँ और पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से व्यंग्य को अनेकों आयाम मिले हैं। विषमता, आडम्बर, भ्रष्टाचार, आतंक और लोलुपता आदि से जुड़कर व्यंग्य सुधार का मार्ग खोलता है। निश्चय ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य में हास्य और व्यंग्य की प्रभावी धाराएं मिलती हैं जिनमें भारतेन्दु का सुधारवादी दृष्टिकोण सामने आता है।

काव्य साहित्य का प्राचीन प्रारम्भिक रूप है जो कवि की कोमल भावनाओं उसकी मनोवृत्तियों की छन्दमय कलात्मक अभिव्यक्ति है। यद्यपि साहित्य शास्त्र में इसका प्रयोग गद्यमय–पद्यमय दोनों प्रकार की रचनाओं के लिए किया जाता था। काव्य में ऐसी उत्पादक क्षमता है जो कवि और पाठक दोनों के चित्र को एक ही रस दशा का अनुभव कराती है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व की प्रथम विशेषता उनका सफल कवि होना है। जिससे उनके काव्य में अनुभूति, प्रज्ञा और हृदय का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है। कवि की भावत्मकता में हृदय पक्ष की प्रधानता है तो उसके काव्य में व्यंग्यात्मक भाव की प्रधानता है। वस्तुतः आधुनिक काव्य में नवयुग चेतना का विकास एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का उदय दोनों ही घटनाएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।[1] भारतेन्दु जी विशिष्ट वर्ग के ही नहीं अपितु सामान्य वर्ग के चर्चित कवि थे, सामान्य वर्ग का आशय उस साहित्य से है जिसमें शारीरिक या मानसिक श्रम करने वाले शोषित वर्ग की वास्तविक स्थिति, संघर्ष, आशा, आकांक्षाओं, सफलताओं व असफलताओं का वास्तविक अंकन होता है। भारेन्दु की रचनाओं का उद्देश्य समस्त भारतीय समाज को तद्युगीन

e-ISJN: A4372-3069 (UGC Approved) ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-III
June 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

यथार्थ से अवगत कराते हुए जागृति करना था। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने हास्य प्रवृत्ति को अपनाया तथा उसका प्रचार भी किया। उन्होंने स्वयं स्वीकार भी किया है कि– ''ऐसे गीतों में रोचक बातें जो स्त्रियों और गँवारों को अच्छी लगे, होनी चाहिए और श्रृंगार हास्य आदि रस इसमें मिले रहे जिससे इसका प्रचार सहज हो जाये।[2]

भारतेन्दु का साहित्य पराधीनता की भाव भूमि में अंकुरित एवं पुष्पित पल्लवित हुआ है। तत्कालीन समय की विषमता एवं असंतोषजनक वातावरण कवि के साहित्य की प्रेरणा बनता था, परन्तु अंग्रेजी शासन से उत्पन्न आतंक एवं विवशता उसके मनोबल को क्षीण कर देती थी। ऐसी ही स्थिति में सर्वप्रथम भारतेन्दु जी ने साहस दिखाया, हास्य का कवच धारण कर अत्यन्त सहजता तथा सरलता से अपनी भावाभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया। हास्य का विकास मानव जाति के लिए एक प्रकार सहानुभूति परक उपचार था साथ ही एक प्रकार का प्रतिक्रियात्मक रक्षा शास्त्र भी था। भारतेन्दु जी की प्रवृत्ति ही हास्य मय थी जिस कारण उनके जीवन व साहित्य दोनों में ही हास्य–व्यंग्य के बहुधा दर्शन होते हैं। उनके काव्य में ऐसे स्थलों की भरमार है जहाँ हास्य–व्यंग्य के शिष्ट एवं परिष्कृत रूपों की स्वाभाविक एवं मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है। हास्य रस भारतेन्दु जी का बहुत ही प्रिय रस रहा है उनका विनोदी जीवन पूर्ण सत्य के साथ काव्य में उत्तर आया है।[3]

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज की उथल–पुथल का साहित्यकार के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भारतेन्दु युग का मानव जीवन अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विसंगतियों एवं विद्रूपताओं से भरा पड़ा था। इसी का प्रभाव भारतेन्दु को प्रभावित करके व्यंग्य के रूप में परिणति हुई। व्यंग्य वेदना और आक्रोश की भावना के साथ–साथ तिरस्कार की प्रवृत्ति को भी प्रेरित करते हैं, साथ ही इनमें अपनी अन्तर्मुखी नैसर्गिक तीव्रता के माध्यम से सहृदयों पर अपनी गहरी छाप छोड़ देने की असाधारण क्षमता भी रखते हैं। भारतेन्दु के समय भारत में न समाजवाद था, न प्रगतिवाद, परन्तु अद्‌भुत व्यंग्यशील, पैनी समाज विश्लेषण दृष्टि से सामाजिक यथार्थ के चित्रण में उन्होंने वह चमत्कार दिखलाया है कि उसकी देन से हम सभी ऋणी हैं।[4]

भारतेन्दु के व्यंग्य की एक विशेषता उनके भाषा चयन की रही है। उनके द्वारा प्रयोग की गयी भाषा प्रगतिशील भी थी, जन सामान्य अरबी, उर्दू को स्वयं में समाहित कर आगे बढ़ जाना चाहती थी। भारतेन्दु की भाषा सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण देन है– हिन्दी की हास्य–व्यंग्य, कटाक्ष–विनोद आदि के योग्य भाषा शैली प्रदान करना।[5] भाषा का विशिष्ट और सार्थक प्रयोग ही उसे कथ्य के सम्प्रेषण के योग्य बनाता है और यही व्यंग्य का अभीष्ट भी होता है। भारतेन्दु की कविता में सांस्कृतिक खोखलेपन के विरूद्ध स्पष्ट व कठोर व्यंग्य उपलब्ध होते

e-ISJN: A4372-3069 (UGC Approved) ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-III
June 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

हैं। किन्तु प्रशासन के विरोध में पाये जाने वाले व्यंग्य का रूप आक्षेप, निन्दा और विरोध को प्रतीकात्मक रूप में ही स्पष्ट करता है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्य में तीखे और चुटीले व्यंग्य की प्रभावी योजना है। इस वर्ग के अन्तर्गत उन व्यंग्यों को समाविष्ट किया गया है, जिनका लक्ष्य आघात करना नहीं, वरन् उपालम्भ देना है। भ्रमर गीत सम्बन्धी पदों में इसी प्रकार के व्यंग्य सन्निहित हैं। इस प्रकार के व्यंग्य भारतेन्दु से पूर्व नन्ददास व सूरदास की कविता में उपलब्ध थे। उनकी गोपियों द्वारा किये गये उपालम्भ साहित्य में विख्यात है। भारतेन्दु द्वारा वर्णित गोपियों का स्वरूप भी पारम्परिक गोपियों से भिन्न नहीं है। कृष्ण के मथुरा गमन के पश्चात् वे अपनी खीझ कभी उद्धव, कभी कृष्ण, कभी कुब्जा तथा कभी अपने आप पर ही प्रकट करती है। मथुरा से आये उद्धव स्वयं को कृष्ण द्वारा प्रेषित, निर्गुण ब्रह्म के ज्ञाता बतलाते हैं। परन्तु गोपियाँ उनके इस कथन पर विश्वास न करके उनका उपहास करती हैं। उपहासपूर्ण पदों के माध्यम से कवि ने निर्गुण भक्ति की कठिनता एवं नीरसता पर प्रत्यक्ष व्यंग्य किया है–

"ऊधो जू सूधो गहो वह मारग,
ज्ञान की तेरे जहाँ गुदरी है।
कोऊ नहीं सिख मानि है ह्याँ इक,
श्याम की प्रीति प्रतीति खरी है।
ये वृज बाला सबै इक सी,
हरिचंद जू मंडली ही बिगरी है।
एक जौ होय तो ज्ञान सिखाइए,
कूप ही में यहाँ भाँग परी है।"[6]

गोपियों द्वारा उपेक्षा भाव प्रदर्शित किये जाने के पश्चात् भी जब उद्धव ज्ञान का उपदेश देते हैं तो गोपियों के मन में खीझ का भाव उत्पन्न हो जाता है, जिसकी अभिव्यक्ति वे कटुवचनों के माध्यम से करती हैं। उनका व्यंग्य कटु व स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त हुआ है। कृष्ण के विरह में व्यथित, अनमनी गोपियों को कभी कृष्ण पर क्रोध आता है और कभी स्नेह। तभी तो वे उन्हें छलिया, निर्मोही, बहुरूपिया आदि न जाने क्या–क्या उपाधियाँ दे डालती हैं। अचानक मथुरा की दिशा से आये भ्रमर को प्रतीक मानकर अपने हृदयोगार प्रकट करती हुई कहती है–

"भौरा रे रस के लोभी तेरो का परमान।

e-ISJN: A4372-3069 (UGC Approved) ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-III
June 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

तू रस मस्त फिरत फूलन पर करि अपने मुख गान।।

इत सो उत डोलत बौरानो किए मधुर–मधु–पान।

'हरिचंद' तेरे चन्द न भूले बात परी पहचान।।''[7]

भारतेन्दु के काव्य में इसी श्रेणी के अनेक पद प्राप्त होते हैं किन्तु सभी में भावात्मक साम्य दिखायी देता है। जिनमें निर्गुण ब्रह्म और ज्ञान पर तीक्ष्ण व्यंग्य निहित है।

संस्कृति मानव जीवन की भूत, वर्तमान और भविष्य की वह निधि है जिससे उसके और उसके पूर्वजों के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, वैज्ञानिक एवं साहित्य कला, सौन्दर्यबोध अर्थात् समस्त जीवन मूल्य प्रतिध्वनित होते हैं।[8] भारतेन्दु काल दो विपरीत संस्कृतियों के सम्मिलन का काल था जिनके पारस्परिक घर्षण से भारत की उन्नति कम, किन्तु अवनति अधिक हुई। भारतेन्दु के समय में भारत की सभ्यता व संस्कृति जिस संक्रान्ति से होकर गुजर रही थी और जिस तीव्रता के साथ उसका विघटन हो रहा था उसी के अनुरूप उन्होंने काव्य सृजन किया। भारतेन्दु अनेक प्रकार के पन्थों को चलाकर समाज को विभक्त करने की चेष्टा करने वाले के धुर विरोधी थे। मुल्ला, मौलवी पर ही नहीं, उन्होंने पण्डितों को भी व्यंग्य का पात्र बनाया है–

''जोग जग्य जप तप तीरथ तपस्या व्रत,

ध्यानदान साधन समूह कौन काम को।

वेद पुरान पढ़ि जान का निधन भयो,

कूर मगरुर पाह पंडिताई नाम को।

जाने सब तऊ अनजाने हैं महान जाने,

राम को न जाने ताहि जानिये हराम को।।[9]

भारतेन्दु ने व्यंग्य की अनुपम शक्ति तथा अभिव्यंजना के एक विशिष्ट माध्यम से राजनीतिक विकारों का निराकरण करना चाहा। उन्होंने अंग्रेजी राज्य की अनेक अनीतिपूर्ण बातें प्रधानतः आर्थिक शोषण का विरोध किया और प्राचीन भारतीय गौरव का गान गाकर स्वतन्त्रता की आवाज बुलन्द की। कानून व कानून के रक्षकों तथा अंग्रेजों की वास्तविकता को भारतेन्दु जी ने व्यंग्य का आश्रय लेकर स्पष्ट किया जो उनकी निर्भीकता व जिन्दादिली का प्रत्यक्ष उदाहरण है। भारतीय समाज की असहनीय परिस्थिति और कठोर प्रशासनिक दमन की पृष्ठभूमि पर भारतेन्दु ने अनेक मनोरंजक मुकरियों की रचना की है–

e-ISJN: A4372-3069 (UGC Approved) ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-III
June 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

"भीतर–भीतर सब रस चूसै।
हँसि हँसि के तन मन धन मूसै।।
जाहिर बातन मैं अति तेज।
क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज।।"[10]

भारतेन्दु की सामाजिक व राजनीतिक कविताओं के विषय में कहा जा सकता है कि उनमें सामाजिक व राजनीतिक दृढ़ता को समाप्त करने की शक्ति है। उन्होंने शासकों की नीतियों के छल व दमन को अपनी व्यंग्यात्मक कविताओं द्वारा जनता के समक्ष प्रकट किया और राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं शोषण के प्रति तीखे व्यंग्य प्रस्तुत किये, जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन को बल मिला और देशवासियों में जागृति की लहर का संचार हुआ। समाज की दयनीय स्थिति पर भी उनके व्यंग्य सार्थक सिद्ध हुए जिन्होंने समाज सुधार के कृत्रिम और आडम्बरी ठेकेदारों की पोल खोल कर जनता को सावधान किया।

भारतेन्दु के काव्य में साहित्य सम्बन्धी व्यंग्य भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। उनके समय में भी शिक्षा विभाग में हिन्दी और उर्दू के प्रश्न पर भारतीय समाज में दो समूह थे। उर्दू समर्थक अपनी भाषा बहुलता के कारण हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की भर्त्सना करते थे। यही स्थिति देवनागरी लिपि के समर्थकों की भी थी। इसके अलावा एक वर्ग ऐसा भी था जिसको हिन्दी अथवा उर्दू में कोई रूचि नहीं थी। वह तो केवल अंग्रेजी भाषा का अनुयायी था। भारतेन्दु ने सभी पर व्यंग्य किया और अपनी मातृभाषा हिन्दी के गुणों को व्यक्त किया–

"पढ़े संस्कृत जतन करि पंडित थे विख्यात।
पै निज भाषा ज्ञान बिन कहि न सकत एक बात।।
पढ़े फारसी बहुत बिध तौहू भये खराब।
पानी खटिया तर रहो पूत भरे बकि आव।।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।।"[11]

भारतेन्दु ने पराधीनता के युग में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक शोषण की विसंगतियों को जिस साहस से अपने काव्य में व्यक्त किया था, वह सराहनीय व महत्त्वपूर्ण है। उनके व्यंग्यों के प्रहार से रूढ़िगत पतित भारतीय समाज की सुप्त भावना को जाग्रत करने की शक्ति थी। उनके काव्य में हास्य व व्यंग्य के विविध

e-ISJN: A4372-3069 (UGC Approved) ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-III
June 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

रूप परिलक्षित होते हैं। वस्तुतः हास्य और व्यंग्य भारतेन्दु का वह अस्त्र था जिसके माध्यम से दलित भारतीय समाज को नैतिक सम्बल प्रदान किया। उन्होंने काव्य को नये विषय, नयी भावनाएँ एवं सोचने की नयी पद्धति दी। भारतेन्दु ने युगों के उपरान्त ऐसे काव्य की रचना की जिसकी परिधि अब केवल नायक व नायिका की विलास लीला तक सीमित नहीं थी अपितु व्यापक होकर मानव जाति के दुःख, दारिद्रय, प्रेम एवं सहानुभूति में लीन हो उठी। इनका हास्य व्यंग्य पूर्ण काव्य देश और समाज के लिए हितकारी सिद्ध हुआ।

सन्दर्भ :

1. डॉ0 हौसिला प्रसाद सिंह, रीति और आधुनिक युगीन कृष्ण काव्य में व्यंग्य विनोद, पृ0 127।
2. सम्पादक– ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग–3, पृ0 931।
3. डॉ0 कृष्ण किशोर मिश्र, भारतेन्दु काव्यादर्श, पृ0 116।
4. प्रभाकर माचवे, संतुलन, पृ0 155।
5. डॉ0 किशोर, साहित्य जीवन और संस्कृति, पृ0 26।
6. सम्पादक– ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रन्थावली, प्रेम माधुरी, पृ0 165।
7. वही, भाग–2, पृ0 111।
8. डॉ0 ज्ञान प्रकाश शर्मा, खड़ी बोली कविता का सांस्कृतिक विवेचन, पृ0 73।
9. सम्पादक– ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग–2, पृ0 326।
10. वही, भाग–2, मधुमुकुल, पृ0 396।
11. सम्पादक– हेमन्त शर्मा, भारतेन्दु समग्र, खण्ड–1, हिन्दी की उन्नति पर व्याख्यान, पृ0 228।